इकाई 17 काव्य–वाचन एवं विश्लेषण : प्यारे भारत देश, अमर राष्ट्र, दीप से दीप जले

इकाई की रूप रेखा

17.0 उद्देश्य

17.1 प्रस्तावना

17.2 चयनित कविताओं का पाठ एवं विश्लेषण

17.3 उपयोगी पुस्तकें

17.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

17.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- माखनलाल चतुर्वेदी की तीन कविताओं की विस्तृत व्याख्या समझ सकेंगी/सकेंगे;
- माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं का मूल स्वर क्या है, इसे पहचान सकेंगी/सकेंगे;
- इन कविताओं के माध्यम से देश प्रेम और आजादी की भावना को समझ सकेंगी/सकेंगे;
- माखनलाल चतुर्वेदी की काव्य–भाषा के तत्वों की पहचान करना सीख सकेंगी/सकेंगे;
- माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में शब्द–योजना और प्रयुक्त शब्दावली से परिचित हो जायेंगी/जायेंगे और
- माखनलाल चतुर्वेदी के जीवन और उनकी साहित्यिक–राजनीतिक यात्रा के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगी/सकेंगे।

17.1 प्रस्तावना

कवि का जीवन–

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल सन 1889 को मध्यप्रदेश के होशंगावाद जिले के बाबई नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता जी का नाम नन्दलाल चतुर्वेदी तथा माता जी का नाम सुंदरी बाई था। इनका विवाह ग्यारसी बाई से हुआ था। सन 1905 में जबलपुर से प्राइमरी टीचर्स ट्रेनिंग, नार्मल शिक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ये अध्यापक हो गये। इन्हें हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, बंगला, गुजराती और अंग्रेजी, भाषा पर भी समान अधिकार प्राप्त था। हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि, कुशल वक्ता, पत्रकार, सम्पादक तथा लेखक होने के साथ–साथ माखनलाल चतुर्वेदी जी एक स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी भी थे। असहयोग आन्दोलन के दौरान उन्हें लगभग दस माह तक कारावास की सजा हुई। वे बिलासपुर की जेल में बंद रहे। 'पुष्प की अभिलाषा' नामक कालजयी कविता उन्होंने जेल में रहते हुए ही लिखी। बाद में शिक्षक पद से त्याग पत्र देकर, पत्रकारिता के क्षेत्र में आ गये। प्रसिद्ध राष्ट्रवादी पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी से वे बहुत प्रभावित थे। माखनलाल चतुर्वेदी की पहचान एक राष्ट्रवादी धारा के कवि के रूप रही है। इनके काव्य का मूल स्वर राष्ट्रवादी है। भारतीय राष्ट्रीय स्वाधीनता

की अनुगूंजें इनकी कविताओं में प्रमुखता से देखने को मिलती हैं। इन्होंने कुछ आध्यात्मिक और रहस्यवादी भावबोध की कवितायें भी लिखी हैं। मगर मुख्यतः वे राष्ट्रवादी विचारों के ही कवि थें और इसी कारण से इन्हें साहित्य जगत में 'भारतीय आत्मा' कहा जाता है।

रचनाएं—चतुर्वेदी जी ने गद्य और पद्य दोनों विधाओं में लिखा है। इनकी प्रमुख कृतियों के नाम हैं—

काव्य संग्रह—'हिम किरीटिनी'(सन 1943),
'हिम तरंगिणी' (सन 1949),
'माता' (सन1951),
'युग चरण' (सन 1956)
'समर्पण' (सन 1956)
'वेणु ले गूंजे धरा' (सन 1960),
'बिजुरी काजल आंज रही' (सन 1954 से 64 के बीच की रचनाओं का संकलन, सन 1980 में प्रकाशित)

कहानी संग्रह— 'कला का अनुवाद'

गद्य काव्य— 'साहित्य देवता' (निबंध संग्रह)

नाटक— 'कृष्णार्जुन—युद्ध', 'सिरजन और मंचन'

संपादन— कर्मवीर, प्रताप, प्रभा (पत्रिका एवं समाचार पत्र)

निबंध— 'समय के पांव' (1962, संस्मरणात्मक)

निबंध संग्रह — अमीर इरादे : गरीब इरादे (1960), रंगों की होली
(सन 1944 तक के निबंधों का संकलन, 1980 में प्रकाशित)

भाषण संग्रह— चिंतन की लाचारी (1965)

सम्मान— सागर विश्व विद्यालय से डी लिट की उपाधि,
सन 1969 में पद्म भूषण सम्मान (सन 1963)

पुरस्कार— साहित्य अकादमी पुरस्कार, देव पुरस्कार

17.2 चयनित कविताओं का पाठ एवं विश्लेषण

एक

प्यारे भारत देश
गगन—गगन तेरा यश फहरा
पवन—पवन तेरा बल गहरा
क्षिति—जल—नभ पर डाल हिंडोले
चरण—चरण संचरण सुनहरा

ओ ऋषियों के त्वेश
प्यारे भारत देश।।

वेदों से बलिदानों तक जो होड़ लगी
प्रथम प्रभात किरण से हिम में जोत जगी
उतर पड़ी गंगा खेतों खलिहानों तक
मानो आँसू आये बलि–महमानों तक

सुख कर जग के क्लेश
प्यारे भारत देश।।

तेरे पर्वत शिखर कि नभ को भू के मौन इशारे
तेरे वन जग उठे पवन से हरित इरादे प्यारे!
राम–कृष्ण के लीलालय में उठे बुद्ध की वाणी
काबा से कैलाश तलक उमड़ी कविता कल्याणी

बातें करे दिनेश
प्यारे भारत देश।।

जपी–तपी, संन्यासी, कर्षक कृष्ण रंग में डूबे
हम सब एक, अनेक रूप में, क्या उभरे क्या ऊबे
सजग एशिया की सीमा में रहता केद नहीं
काले गोरे रंग–बिरंगे हममें भेद नहीं

श्रम के भाग्य निवेश
प्यारे भारत देश।।

वह बज उठी बासुँरी यमुना तट से धीरे–धीरे
उठ आई यह भरत–मेदिनी, शीतल मन्द समीरे
बोल रहा इतिहास, देश सोये रहस्य है खोल रहा
जय प्रयत्न, जिन पर आन्दोलित–जग हँस–हँस जय बोल रहा,

जय–जय अमित अशेष
प्यारे भारत देश।

संदर्भ और प्रसंग–

माखनलाल चतुर्वेदी की 'प्यारे भारत देश' कविता उनके काव्य संग्रह, 'वेणु लो गूंजे धरा' में संकलित है। यह उनकी प्रसिद्ध कविताओं में से एक है। माखनलाल चतुर्वेदी स्वाधीनता आंदोलन से प्रेरित राष्ट्रप्रेमी कवि थे और देशप्रेम ही उनकी अधिकांश कविताओं का केन्द्रीय भाव होता है। इस कविता में भी वही भाव है। यह कविता अंग्रेजी शासन की गुलामी के बोझ से दबी भारत की जनता में देशभक्ति और स्वतंत्रता की चेतना जगाने के लिए लिखी गयी है। इसमें देश के गौरवपूर्ण अतीत की बड़े ही काव्यात्मक गरिमा के साथ प्रशंसा की गयी है। यह देश की अभ्यर्थना का गीत है। पाठकों को अपने प्यारे भारत के विस्मृत गौरव और महिमा से परिचित करा कर, उनके मन में देश प्रेम की भावना जगाना इस कविता का उद्देश्य है।

कठिन शब्द

गगन–आकाश, **यश**– इज्जत, सम्मान, प्रतिष्ठा, **पवन**– हवा, **क्षिति**– आकाश, **नभ**– आसमान, **संचरण**–गतिशील, **त्वेश**–चमक, प्रकाश, **प्रभात**–सवेरा, **जोत**– प्रकाश, रोशनी, **क्लेश**– दुख, **पर्वत**–पहाड़, **शिखर**–चोटी, **भू**–भूमि, **हरित**–हरी भरी, **काबा**–इस्लाम धर्म का तीर्थ, **कैलाश**– भगवान शिव का स्थान, **दिनेश**–सूरज, **जपी तपी**– जप तप करने वाले साधु–संन्यासी, **कर्षक**–किसान, **कृष्ण**–सावला, **निवेश**–निवास, जमा करना, **मेदिनी**– भूमि या पृथ्वी, **समीर**– हवा, **अमित–अशेष**– जिसकी कोई सीमा न हो,

व्याख्या–

1. भारत देश की प्रसंशा में कवि कहता है कि हे ऋषियों मुनियों की पुण्य परम्परा से दीपित हमारे प्यारे देश! तुम्हारा यश सारे संसार में– धरती से आकाश तक फैला हुआ है। हवायें तुम्हारे बल वैभव का गीत गाती हैं। सदियों से तुम्हारी यात्रा का हर कदम सुंनहला रहा है।

2. इस बंद में भारत देश पर प्रकृति की विशेष कृपा का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि हे प्यारे भारत देश! ज्ञान और बलिदान दोनों ही क्षेत्रों में दुनिया तुमसे होड़ लेने में लगी है। हिमालय की चोटी पर सुबह–सुबह जब सूरज की सुनहली किरणें पड़ती हैं तो बर्फीली चोटियां चमक उठती हैं। तुम्हारे खेतों खलिहानों को हरा–भरा करने के लिए हिमालय से गंगा स्वयं मैदानों में उतर आयी हैं, मानों बलिदान के लिए तत्पर आजादी के मेहमानों तक आंसू स्वयं चलकर आये हों। हे भारत देश! प्रार्थना है कि संसार के दुखों को सुख में बदल दो।

3. हे मेरे प्यारे भारत देश! तुम्हारे पर्वतों की ऊंची चोटियां, भूमि के मौन इशारों को आकाश तक पहुंचा रही हैं। और सभी हरे भरे वन उपवन हवा के स्पर्श से लहलहा उठे हैं। राम और कृष्ण की लीला भूमि पर बुद्ध के उपदेश गूंज रहे हैं। काबा से लेकर कैलाश तक कल्याण की कामना करती हुई तमाम कविताएं उमड़ी हुई हैं। कल्याण के मार्ग पर सभी धर्म और पंथ एक साथ चल रहे हैं। सूर्य तुमसे बातें करता है।

4. हे मेरे प्यारे भारत देश! तुम इतने महान हो कि तुम्हारे यहां भगवद भजन करने वाले, संन्यासी से लेकर किसान तक सब कृष्ण की भक्ति में रमें रहते हैं। यहां किसी में कोई भेद नहीं है। ऊंची नीची सभी श्रेणियों के लोग एकता के सूत्र में बंधे हैं। तुम्हारा देश एशिया की सीमा में कभी कैद नहीं रहा। यह एक सजग और खुली चेतना वाला देश है। यहां काले और गोरे का भेद–भाव नहीं है यह एक बहुरंगी देश है और सभी रंग के लोग आपस मे प्रेम भाव रखते हैं। सबको श्रमानुसार फल प्राप्त होता है।

5. कवि कहता है कि हे प्यारे भारत देश! इधर यमुना के किनारे कृष्ण की बंसी धीमें सुर में बजनी शुरू होती है, उधर से भारत माता शीतल मंद सुगंधित वायु का झकोरा महसूस कर के जाग जाती है। अपने देश के इतिहास का स्मरण करते हुए कवि कहता है कि हमारा इतिहास तो बोल रहा है। रहस्यमय ढंग से सोये हुए देश को जगाने का प्रयत्न चल रहा है। पूरा संसार आंदोलित होकर हमारी प्रशंसा कर रहा है। कभी न समाप्त होने वाले, निस्सीम संभावनाओं वाले हे प्यारे भारत देश! तुम्हारी जय हो!

काव्य सौष्ठव–

इस कविता में तत्सम शब्द बहुत हैं, और शब्द योजना भी सामासिक है। भाव बहुत रसात्मक हैं।

यह कविता संबोधन शैली में लिखी गयी है। इस कविता का मूल भाव पाठक के मन में भारत भूमि के प्रति प्रेम जाग्रत करना है। कविता इसमें पूरी तरह सफल है।

इस बंद में बर्फीली चोटियों पर पड़ने वाली प्रभात की किरणों से पैदा होने वाली सुनहली चमक और हरे भरे वनों में बहने वाली शीतल मंद सुगंध से भरी हवाओं का बड़ा ही मनोहारी चित्रण किया गया है। गंगा का मैदानों में स्वयं उतर कर आने का बिम्ब बड़ा ही अनूठा है।

कविता में भारत देश का मानवीकरण हुआ है। इससे कविता में वर्णित दृश्यों और विवरणों में सजीवता का संचार हो गया है।

इस कविता में कुल पांच बंद हैं। प्रत्येक बंद मे प्रथम चार पंक्तियां 16 मात्राओं की और अंतिम दो पंक्तियां, जिन्हें टेक कह सकते हैं, नौ मात्राओं की हैं। प्रत्येक बंद के अंत में आया टेक भारत की छवि को नये–नये आयामों से देखने की समझ देते हैं।

विशेष

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय चेतना का कवि होने के साथ साथ राष्ट्रवाद की भावना से भरे हुए एक सेनानी भी थे। इसलिए देश–प्रेम की धारा उनकी प्रायः सभी कविताओं में प्रवाहित दिखती है। वे देश को कोई भूमि का टुकड़ा नहीं, आजादी के लिए तड़पती हुई आत्मा के रूप में अनुभव करते थे।

दो

अमर राष्ट्र
छोड़ चले, ले तेरी कुटिया,
यह लुटिया–डोरी ले अपनी,
फिर वह पापड़ नहीं बेलने
फिर वह माल पड़े न जपनी।

यह जागृति तेरी तू ले–ले,
मुझको मेरा दे–दे सपना,
तेरे शीतल सिंहासन से
सुखकर सौ युग ज्वाला तपना।

सूली का पथ ही सीखा हूँ,
सुविधा सदा बचाता आया,
मैं बलि–पथ का अंगारा हूँ,
जीवन–ज्वाल जलाता आया।

एक फूँक, मेरा अभिमत है,
फूँक चलूँ जिससे नभ जल थल,
मैं तो हूँ बलि–धारा–पन्थी,
फेंक चुका कब का गंगाजल।

इस चढ़ाव पर चढ़ न सकोगे,
इस उतार से जा न सकोगे,
तो तुम मरने का घर ढूँढ़ो,
जीवन–पथ अपना न सकोगे।

श्वेत केश?– भाई होने को–
हैं ये श्वेत पुतलियाँ बाकी,
आया था इस घर एकाकी,
जाने दो मुझको एकाकी।

अपना कृपा–दान एकत्रित
कर लो, उससे जी बहला लें,
युग की होली माँग रही है,
लाओ उसमें आग लगा दें।

रस उसका जिसकी तरूणाई,
रस उसका जिसने सिर सौंपा,
आगी लगा भभूत रमायी।

जिस रस में कीड़े पड़ते हों,
उस रस पर विष हँस–हँस डालो
आओ गले लगो, ऐ साजन!
रेतो तीर, कमान सँभालो।

हाय, राष्ट्र–मन्दिर में जाकर,
तुमने पत्थर का प्रभू खोजा!
लगे माँगने जाकर रक्षा
और स्वर्ण–रूपे का बोझा?

मैं यह चला पत्थरों पर चढ़,
मेरा दिलबर वहीं मिलेगा,
फूँक जला दें सोना–चाँदी,
तभी क्रान्ति का समुन खिलेगा।

चट्टानें चिंघाड़े हँस–हँस,
सागर गरजे मस्ताना–सा,
प्रलय राग अपना भी उसमें,
गूँथ चलें ताना–बाना–सा,

बहुत हुई यह आँख–मिचौनी,
तुम्हें मुबारक यह वैतरनी,
मैं साँसों के डाँड उठाकर,
पार चला, लेकर युग–तरनी।

मेरी आँखे, मातृ–भूमि से
नक्षत्रों तक, खीचें रेखा,
मेरी पलक–पलक पर गिरता
जग के उथल–पुथल का लेखा !

मैं पहला पत्थर मन्दिर का,
अनजाना पथ जान रहा हूँ,
गूड़ँ नींव में, अपने कन्धों पर
मन्दिर अनुमान रहा हूँ।

मरण और सपनों में
होती है मेरे घर होड़ा–होड़ी,
किसकी यह मरजी–नामरजी,
किसकी यह कौड़ी–दो कौड़ी?

अमर राष्ट्र, उद्दण्ड राष्ट्र, उन्मुक्त राष्ट्र !
यह मेरी बोली
यह 'सुधार' 'समझौतों' वाली
मुझको भाती नहीं ठठोली।

मैं न सहूँगा–मुकुट और
सिंहासन ने वह मूँछ मरोरी,
जाने दे, सिर, लेकर मुझको
ले सँभाल यह लोटा–डोरी !

(विविध कविताएं संग्रह से)

संदर्भ प्रसंग–यह कविता माखनलाल चतुर्वेदी के 'विविध कविताएं' संग्रह में संकलित है। इसे उनकी प्रतिनिधि कविताओं में से एक माना जाता है। दूसरी कविताओं की तरह इस कविता के केन्द्र में भी राष्ट्र–प्रेम ही है। इस कविता में, मातृभूमि की आजादी के लिए हर तरह का त्याग और बलिदान करने की प्रबल भावना मुखरित हुई है।

कठिन शब्द

माल–माला, **जागृति**–जागरूकता, **ज्वाला**–आग की लपट, **सूली**–फांसी, **बलि–धारा पंथी**– उस विचारधारा के लोग जो त्याग बलिदान और कठिनाइयों भरा जीवन पसंद करते हैं, **श्वेत–केश**– सफेद बाल, **तरूणाई**–जवानी, **भभूत**– राख, जिसे साधु लोग शरीर पर लगाते हैं, **विष**–जहर, **स्वर्ण–रूपे**–सोना चांदी, **दिलबर**–प्रेम, **मुबारक**–मनोकामना सफल हो, **सुमन**–फूल, **उन्मुक्त**– पूरी तरह स्वतंत्र।

व्याख्या–

कविता के आरंभ में ही कवि दो विकल्पों की बात करता है–एक, 'सुखी जीवन' का और दूसरा–मातृभूमि के लिए त्याग और बलिदान के रास्ते पर चलने का। वह बड़े साफ शब्दों में कहता है कि यह जो सुख का सांसारिक जीवन है, इसे मैं आज इसी वक्त छोड़ता हूं। अब मुझे इस माया मोह में नहीं पड़ना।

पहले बंद की बात को आगे बढ़ाते हुए कवि कहता है कि मुझे तेरी जागृति नहीं मेरा सपना चाहिए। तुम्हारे राज पाट का सुख भोगने में मेरी कोई रूचि नहीं है। मुझे तो देश के लिए अगर सौ युगों तक अग्नि की ज्वाला में तपना पड़े तो वह तुम्हारे सिंहासन से कई गुना सुखकर लगेगा।

इस बंद से पता चलता है कि कवि बलि–पंथी है। जो बलिदान की भावना से मृत्यु का जयगान करते हैं, जिनकी वाणी और कर्म में अंतर नहीं होता, जो कारागार को कृष्ण मंदिर, हथकड़ी को माता, पृथ्वी को बिस्तर और आकाश को ही छत समझते है और इंद्रपुरी का सुख भी ठुकरा कर स्वयं को राष्ट्र के लिए समर्पित कर सकते हैं, उन्हें बलि–पंथी कहा जाता है। इस बंद में कवि सुख और सुविधा का रास्ता छोड़ जीवन–ज्वाल में तपने की बात करता है।

बलि–पंथी विचारों का प्रतिनिधित्व करते हुए कवि कहता है कि मैं तो नभ से लेकर जल और थल तक में आग लगा देने के लिए तत्पर हूं। मैंने गंगाजल को कब का फेक दिया है।

सुविधा भोगी जनों से कवि अपने बारे में बताता है कि जिस पथ का वह पथिक है, वह ऊंची–ऊंची कठिन चढ़ाइयों और घाटियों से भरा है। इसपर चलना तुम सुविधाभोगियों के वश का नहीं है। यह जीवन–पथ है। तुमलोग मरण के रास्ते पर जाने का रास्ता ढूंढो। इस बंद में कवि देश के लिए मर मिटने मे ही जीवन की सार्थकता देखता है और–

कहता है कि हमारे बाल सफेद हो गये है तो क्या? अभी आंखें सही सलामत हैं। इस संसार में अकेला आया था तो अकेले ही जाने दो। हमें किसी के समर्थन की फिक्र नहीं है।

कवि कहता है कि देश के लिए कठिन से कठिन राह पर चलने में हमें खुशी होगी। मुझे किसी की कृपा नहीं चाहिए। ऐसी कृपाओं का होलिका दहन कर के हम मनोरंजन करना चाहते हैं। यही आज के युग की मांग है।

अंग्रेजी दसता के युग में, सुख सुविधाओं का आनंद लेने में जीवन का रस नहीं है। असली रस तो अपनी तरूणाई के दिनों में ही देश हित में सिर कटा लेने में और अंग्रेजी शासन को जलाकर राख कर देने में है।

गुलामी की भत्सर्ना करते हुए कवि कहना चाहता है कि दासता का जीवन चाहे जितना भी सुख सुविधाओं से भरा हो, व्यर्थ है। इस पराधीन जीवन का रस उस रस के समान होता है जिसमें कीड़े पड़ते हैं। ऐसे रस को पीने से अच्छा है उस पर विष डालकर समाप्त कर देना। अतः हे मित्र दासता का जीवन–रस त्याग कर आओ, हमारे गले लग जाओ और युद्ध के लिए तीर कमान सम्हाल लो।

तुम कैसे हो? राष्ट्र रूपी मंदिर में तुम ऐसे प्रभु की पूजा क्यों करने लगे जो पत्थर का है! और उस पत्थर के देवता से तुम अपनी रक्षा तथा सुख सुविधाओं की मांग करने लगे? तुम कैसे राष्ट्र प्रेमी हो? मुझे तुम्हारे ऊपर तरस आता है।

कवि कहता है कि ऐसे पत्थर के प्रभुओं अर्थात अंग्रेजी शासन के मालिकों के सीने पर चढ़ कर मैं क्रांति का सुमन खिलाने अर्थात दासता से मुक्ति के संघर्ष में शामिल होने जाता हूं। जब तक धन दौलत सोना चांदी का लोभ नहीं छूटेगा, क्रांति भी नहीं होगी। अतः हम देश को आजाद कराने के लिए हर तरह का धन दौलत भस्म करने को तैयार हैं।

इस बंद में प्रलय काल का दृश्य रचा गया है। चट्टानें एक दूसरे से टकरा रही हैं, समुद्र में तेज ऊफान आने से उत्पन्न घोर कठोर ध्वनि से आकाश और धरती पर भयानक अफरा तफरी मच गयी है। कवि भी ऐसे ही प्रलय का राग गाना चाहता है, अर्थात जंगे आजादी की ऐसी प्रलयंकारी कल्पना करना चाहता है जिसमें ब्रिटिश राज का विध्वंश हो जायेगा।

कवि कहता है कि ब्रिटिश राज की वैतरनी पर बैठकर जीवन का सुख पाने के इच्छुक लोगों! तुम्हें यह जीवन मुबारक हो! मैं तो अब शत्रुओं के साथ लुका छिपी के खेल से तंग आ गया हूं। अर्थात अब बहस, समझौते, वार्ता, और हुकूमत में भागीदारी की भीख मांगने वाली जीर्ण शीर्ण नीतियों से तंग आ चुका हूं। अब तो मैं खुद अपनी जिन्दगी को डांड और नाव बनाकर गुलामी की इस नदी को पार करने निकल रहा हूँ।

इस बंद में कवि अपनी आंखों में पल रहे प्रलय दृश्य की तरफ इशारा करता है। मातृ–भूमि के लिए कवि की आंखों में तैर रही यह प्रलय कल्पना बड़े सुंदर ढंग से व्यक्त हुई है।

कवि कहता है कि आजादी की लड़ाई का यह जो भव्य मंदिर बनने जा रहा है, मैं उसकी नींव में रखा गया पहला पत्थर हूं। मंदिर कैसे बनेगा, अर्थात किन–किन रास्तों पर चल कर आजादी की मंजिल मिलेगी, इसका मुझे ठीक पता नहीं है। लेकिन जिस मंदिर को बनाने अर्थात आजादी को पाने के लिए मैंने अपना कंधा समर्पित किया है, उस पर मंदिर की रूपरेखा, अर्थात आजादी मिलने के बाद देश जैसा बनेगा उसका अनुमान तो कर ही सकता हूं।

अपने सपनों को साकार करने के लिए मरने के लिए भी तैयार रहना है। हमारे भीतर आजादी के लिए बलिदान होने की अभिलाषा और आजादी के सपनों में होड़ा होड़ी मची रहती है। इस होड़ा होड़ी में किसी की नहीं चलती।

इस बंद में आजादी के क्रांतिवीरों के स्वभाव का चित्रण संकेतों में किया गया है। अपने शत्रु के साथ समझौता और सुधार की मांग करने वाले नेताओं की निन्दा करते हुए साफ–साफ कहा गया है कि शत्रु के साथ हंसी ठिठोली समझौते और राहत की मांग का तरीका हमें तनिक भी पसंद नहीं है। हमें हर हाल में अपना अमर, उन्मुक्त और हर समय युद्ध के लिये सन्नद्ध आत्म सम्मान से पूर्ण राष्ट्र चाहिए।

अंत में कवि एक बार पुनः कविता के आरम्भ में कही गयी बात को दुहराते हुए कहता है– मैं इन अंग्रेजों के मुकुट, सिंहासन और मूछ मरोड़ी को अब और सहन नहीं कर सकता। हमें तो सब कुछ छोड़–छाड़ कर, केवल सिर लेकर जाना है। आजादी के मैदान में सर कटाने के लिए जाने दो।

काव्य सौष्ठव–

- कविता का मूल भाव राष्ट्र प्रेम है।
- त्याग और बलिदान को श्रेष्ठ मूल्य माना गया है।
- देश की आजादी तथा सम्मान के लिए सर्वस्व त्याग करने की प्रेरणा देना कविता का प्रतिपाद्य है
- रूपकों और उपमाओं का बड़ा सुंदर प्रयोग हुआ है।
- कविता के बंद छोटे और संबोधन शैली में लिखे गये है।
- भाषा का प्रवाह कविता को सरस बनाता है।
- इसमें वीर रस का समावेश हैं।
- जीवन–ज्वाला, जीवन–पथ, बलि–पंथ आदि शब्द युग्मों से कविता का सौंदर्य बढ़ गया है। रूपक की सुंदर रचना देखने को मिलती है।

- मुहावरों का बड़ा सटीक उपयोग हुआ है। कविता के पहले बंद में, 'यह लो अपनी लुटिया –डोरी' और 'हमको पापड़ नहीं बेलने' जैसी मुहावरेदार भाषा का प्रयोग बड़े ही प्रभावी ढंग से किया गया है।

विशेष–

इसमें कविता में तत्सम शब्दों का अपेक्षाकृत कम प्रयोग हुआ है। भाषा संवाद धर्मी है। त्याग और बलिदान की हमारी सदियों पुरानी परंपरा के श्रेष्ठ मूल्यों को प्रतिष्ठा प्रदान की गयी है।

तीन

दीप से दीप जलें

दीप से दीप जलें
सुलग–सुलग री जोत दीप से दीप मिलें
कर–कंकण बज उठे, भूमि पर प्राण फलें।

लक्ष्मी खेतों फली अटल वीराने में
लक्ष्मी बँट–बँट बढ़ती आने–जाने में
लक्ष्मी का आगमन अँधेरी रातों में
लक्ष्मी श्रम के साथ घात–प्रतिघातों में
लक्ष्मी सर्जन हुआ
कमल के फूलों में
लक्ष्मी–पूजन सजे नवीन दुकूलों में।।

गिरि, वन, नद–सागर, भू–नर्तन तेरा नित्य विहार
सतत मानवी की अँगुलियों तेरा हो शृंगार
मानव की गति, मानव की धृति, मानव की कृति ढाल
सदा स्वेद–कण के मोती से चमके मेरा भाल
शकट चले जलयान चले
गतिमान गगन के गान
तू मिहनत से झर–झर पड़ती, गढ़ती नित्य विहान।।

उषा महावर तुझे लगाती, संध्या शोभा वारे
रानी रजनी पल–पल दीपक से आरती उतारे,
सिर बोकर, सिर ऊँचा कर–कर, सिर हथेलियों लेकर
गान और बलिदान किए मानव–अर्चना सँजोकर
भवन–भवन तेरा मंदिर है
स्वर है श्रम की वाणी
राज रही है कालरात्रि को उज्ज्वल कर कल्याणी।।

वह नवांत आ गए खेत से सूख गया है पानी
खेतों की बरसन कि गगन की बरसन किए पुरानी
सजा रहे हैं फुलझड़ियों से जादू करके खेल
आज हुआ श्रम–सीकर के घर हमसे उनसे मेल।

तू ही जगत की जय है,
तू है बुद्धिमयी वरदात्री
तू धात्री, तू भू–नव गात्री, सूझ–बूझ निर्मात्री।।

युग के दीप नए मानव, मानवी ढलें
सुलग–सुलग री जोत! दीप से दीप जलें। (विविध कविताएं संग्रह से)

संदर्भ प्रसंग–

'दीप से दीप जले' शीर्षक कविता माखनलाल चतुर्वेदी जी के ''विविध कवितायें'' नामक संग्रह से ली गयी है। इसमें दीपावली पर्व पर लक्ष्मी की पूजा का वर्णन है। दीपक से दीपक जलाकर प्रकाश का विस्तार करने के लाक्षणिक महत्व के बहाने से कवि भारतीय जनता में राष्ट्रीयता की रक्षा के लिए एकता की भावना भरना चाहता है। इसमें लक्ष्मी और श्रम के सम्बन्ध को बड़े कलात्मक ढंग से व्यंजित किया है।

दीपावली पर उत्साहित होकर कवि कामना करता है कि जिस तरह दीप से दीप जला कर उजाला किया गया है, उसी तरह लोगों को चाहिए कि मिल जुल कर देश में आजादी की चेतना का प्रकाश फैलायें। जिस तरह दीप प्रज्वलित करती महिलाओं के हाथ के कंगन बज रहे हैं उसी तरह राष्ट्रीयता की चेतना का संचार हो।

लक्ष्मी और श्रम को एक दूसरे का पर्याय मानते हुए कवि कहता है कि दीपावली के समय वीराने खेतों में जो फसलें फैली हुई हैं वही लक्ष्मी हैं। अमावस्या की काली रात में लक्ष्मी का आगमन मेहनती लोगों के घरों में होता है। जिस लक्ष्मी जी का कमल के फूल और नये नये वस्त्रों में पूजन अर्चन हो रहा है, वह श्रम की देवी हैं।

कवि प्रार्थना करता है कि हे देवी, पर्वतों, वनों, नदियों, सागर, और भारत भूमि पर तुम हमेशा विचरण करो। देश हमेशा अपने श्रम से तुम्हारा शृंगार करता रहे। श्रम से उत्पन्न पसीने की बूंदें उसके ललाट पर मोतियों की तरह दमती रहें। अर्थात हमारे देश के लोग हमेशा श्रमशील बने रहें। हे देवी! तुम श्रम रूपी पेड़ का फल हो। श्रमशील लोगों के जीवन को तुम सम्पन्न बनाती हो।

इस पद में कवि कहता है कि उषा की किरणें अपनी लाली से तुम्हारे पैरों में महावर लगाती है और संध्या तो तुम्हारे उपर अपनी समस्त सुंदरता ही न्यौछावर कर देती है। रात अपने दीप जला कर तेरी आरती उतारती है। यह समूचा मानव जगत अपना सिर हथेलियों में लेकर तुम्हारी अभ्यर्थना करता रहता है। श्रमिकों का घर ही तेरा मंदिर है और श्रमिक समाज की वाणी में ही तेरी प्रार्थनाओं की गूंज छिपी है। हे जगत का कल्याण करने वाली, तू अमावस्या की काल रात्रि को प्रकाश से उज्जवल कर रही हो।

इस कविता में लक्ष्मी भारत भूमि का प्रतीक बनती हुई देखी जा सकती हैं। जैसे श्रम से लक्ष्मी का अर्जन होता है, वैसे ही बलिदान से स्वतंत्रता की देवी प्रसन्न होती हैं।

दीपावली का समय है। फसल पक गयी है, घर में नया अन्न आ गया है, खेतों का पानी सूख गया है। बच्चे फुलझड़ियों का खेल सजा रहे हैं। ऐसे उत्सवी समय में मेहनत के पसीने से फल रूपी फसल का मेल

कठिन शब्द

कर–कंकण–हाथ का कंगन, **सर्जन**–निर्माण, **दुकूल**–वस्त्र, **भू–नर्तन**–भूमि का नृत्य, **धृति**–धैर्य, **स्वेद–कण**–पसीने की बूंदे, **शकट**–लकड़ी की गाड़ी, **रजनी**–रात, **उषा**–सवेरा, **श्रम–सीकर**–मेहनत का पसीना, **धात्री**–धरती, **गात्री**–शरीर

हुआ है। लक्ष्मी की अभ्यर्थना में कवि कहता है कि हे देवी! तू ही सबको धारण करने वाली, धरती है, तू स्वयं पृथ्वी स्वरूपा है।

देश के पुरूष और महिलायें युग को प्रकाशित करने वाला नया दीप बनें। हे ज्योति तुम जलों! और दीपों से दीप जलते रहें।

काव्य–सौष्ठव :

- सामासिक पदों के प्रयोग से कविता का सौंदर्य बढ़ गया है।
- लक्ष्मी को मानव श्रम की सर्जना कह कर श्रम को पूजनीय महत्व दिया गया है।
- कुछ पदों में प्रकृति का बड़ा ही मनोहारी मानवीकरण किया गया है।
- श्रम–सीकर और कर–कंकण में रूपक अलंकार का बड़ा सुंदर प्रयोग हुआ है।

विशेष–इस कविता में दीवाली पर्व का सुंदर चित्रण हुआ है और लक्ष्मी देवी को श्रम की धात्री और गात्री कह कर श्रम के महत्व को स्थापित किया गया है।

बोध प्रश्न–1

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर संक्षेप में दें–

1. माखनलाल चतुर्वेदी के बारे में क्या जानते हैं?

.....

.....

.....

.....

2. 'प्यारे भारत देश कविता' किसे संबोधित कर के लिखी गयी है? इसमें कवि ने क्या कहा है?

.....

.....

.....

.....

3. 'अमर राष्ट्र' कविता में बलि–धारा–पंथी पद से कवि का क्या आशय है?

.....

.....

.....

.....

4. 'अमर राष्ट्र' कविता में कवि कुटिया और लोटा–डोरी छोड़ कर कहां जाना चाहता है?

.....

.....

.....

.....

5. 'दीप से दीप जले' कविता के चौथे बंद में उषा किसके पांव में महावर लगाती है?

.....

.....

.....

.....

6. प्रकृति का मानवीकरण से क्या आशय है? ऊपर की तीनों कविताओं में से प्रकृति के मानवीकरण का कोई उदाहरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

बोध प्रश्न–2

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. गगन –गगन में कौन समास है?

   क) तत्पुरूष समास ख) बहुब्रीहि समास ग) कर्मधारय समास
   घ) कोई समास नहीं

2. 'प्यारे भारत देश' कविता किसे सम्बोधित करके लिखी गयी है?

   क) भारत देश ख) उत्तर प्रदेश ग) संसार घ) सेनानी

3. माखनलाल चतुर्वेदी किस भाषा के पत्रकार थे?

   क) हिन्दी ख) अंग्रेजी ग) उर्दू घ) बांग्ला

4. चतुर्वेदी जी की कविता पर किस काव्यप्रवृत्ति का प्रभाव देखने को मिलता है?

   क) छायावाद ख) प्रगतिवाद ग) राष्ट्रवाद घ) प्रयोगवाद

5. 'प्यारे भारत देश' किस संग्रह में संकलित है?

   क) हिम किरीटिनी ख) हिम तरंगिणी ग) बिजुरी काजर आंज रही
   घ) वेणु लो, गूंजे धरा

6. बलि–पंथ किस प्रकार का पंथ है?

क) त्याग और बलिदान का पंथ ख) सनातन पंथ
ग) भोग विलास का पंथ घ) अघोर पंथ

7. चतुर्वेदी जी की कविता का प्रधान विषय क्या होता है?

क) देश ख) प्रकृति ग) मनुष्य ध) जीव जगत

8. उषा किसको महावर लगा रही है?

क) लक्ष्मी को ख) पार्वती को ग) धरती को घ) नदी को

9. नवीन दुकूल का अर्थ क्या है?

क) नया आभूषण ख) नया वस्त्र ग) नया विचार घ) नया युग

10. लक्ष्मी का सर्जन किससे हुआ बताया गया है?

क) श्रम से ख) पसीना से ग) फसलों से घ) धन से

11. चतुर्वेदी जी को साहित्य एकादमी किस पुस्तक के लिए मिला था?

क) हिम तरंगिणी ख) वेणु लो गूंजे धरा ग) समर्पण घ) समय के पांव

12. चतुर्वेदी जी जेल किस कारण गये थे?

क) असहयोग आंदोलन में भाग लेने के कारण
ख) आपत्तिजनक लेख लिखने के कारण
ग) गुप्त गतिविधियों मे शामिल होने के कारण
घ) कभी जेल नहीं गये

13. श्रम–सीकर में कौन सा अलंकार है?

क) रूपक ख) उत्प्रेक्षा ग) उपमा घ) अनुप्रास

14. भवन–भवन तेरा मंदिर है। यह किसके लिए कहा गया है?

क) धरती के लिए ख) लक्ष्मी के लिए ग) प्रकृति के लिए
घ) भारत माता के लिए

15. माखनलाल चतुर्वेदी जी को किस प्रकार का कवि माना जाता है?

क) प्रगतिवादी ख) स्वच्छंदतावादी ग) राष्ट्रवादी घ) रहस्यवादी

17.3 उपयोगी पुस्तकें

- 'कुछ कविताएं', माखनलाल चतुर्वेदी
- 'वेणु ले गूंजे धरा', माखनलाल चतुर्वेदी

17.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न–1

1. माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल सन 1889 को मध्यप्रदेश के होशंगावाद में हुआ था। हिन्दी का प्रतिष्ठित राष्ट्रवादी कवि, कुशल वक्ता, पत्रकार, सम्पादक तथा लेखक होने के साथ–साथ चतुर्वेदी जी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी भी थे। असहयोग आन्दोलन के दौरान उन्हें लगभग दस माह तक कारावास की सजा हुई। 'पुष्प की अभिलाषा'नामक कालजयी कविता की रचना उन्होंने जेल में रहते हुए ही लिखी थी।

2. इसमें देश के गौरव पूर्ण अतीत की बड़े ही काव्यात्मक गरिमा के साथ प्रशंसा की गयी है। यह देश की अभ्यर्थना का गीत है। पाठकों को अपने प्यारे भारत के विस्मृत गौरव और महिमा से परिचित करा कर, उनके मन में देश प्रेम की भावना जगाना इस कविता का उद्देश्य है।

3. बलिपंथी धारा देश प्रेमियों की वह धारा है जो देश के हित में हर तरह का कष्ट उठाने में सुख का अनुभव करते हैं। बलिपंथी आकाश को छत, धरती को बिछौना और आंखों से निकले आंसू को जल समझते हैं। मातृभूमि के लिए हथकड़ियों बेड़ियों में बंधना हर बलिपंथी का सपना होता है।

4. कुटिया और लोटा–डोरी छोड़ कर कवि मातृभूमि को आजाद कराने के लिए युद्ध भूमि की ओर निकल जाना चाहता है। उसे घर में रहना बंधन मे रहने जैसा लगता है।

5. उषा लक्ष्मी देवी के पांवों में महावर लगा रही है।

6. साहित्य में किसी वस्तु या जीव जगत के पशु पक्षी पेड़ आदि को मनुष्य रूप में कल्पित कर लिया जाता तो उसे मानवीकरण कहते हैं। प्रकृति का मानवीकरण छायावादी कविता की प्रधान विशेषता रही है। माखन लाल की 'दीप से दीप जले' कविता के चौथे बंद मे उषा, महावर लगा रही है, संध्या अपनी शोभा न्यौछावर कर रही है और रात दीपक जलाकर आरती उतार रही है। यहां उषा, संध्या और रात का मानवीकरण किया गया है।

बोध प्रश्न–2

i. क

ii. क

iii. क

iv. ग

v. घ

vi. क

vii. क

viii. क

ix. ख

x. क

xi. क

xii. क

xiii. ख

xiv. ख

xv. ग

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY